अनुताप राम का

सियाराम पांडेय 'शांत'

बड़े सबेरे पहुंच राम को
खबर दूत ने ज्यों बतलायी।
कौंधी अंतर्मन में बिजली,
पीड़ा से नस-नस भर आयी।

कहा दूत ने रजक बोलता,
मैं भी राम अधिपति बन जाऊं।
दशमुख के घर रही सिया-सी
मैं तुझ कुलटा को अपनाऊं।

दृष्टि ओट हो, जा तू मयके,
मैं तेरा परित्याग कर रहा।
कभी मांग सिंदूर भरा था,
अब सदैव को तुझे तज रहा!

कितना मुझे सताया तूने,
रही रात भर घर से बाहर।
तुझे साथ रख अब समाज से
क्यों झेलूं अपमान निरादर ?

सुन यह राम हुए उद्वेलित ,
आंसू ढुलक पड़े गालों पर।
होंठ फड़कते रहे देर तक,
चिंता रेख दिखी बालों पर।

तिल-तिल आई याद कहानी
दुख ललाट पर लिखवा लाए।
दुखियारों के कष्टलोक की
तारावलियां खिल-खिल जाए।

Janak Seva Ashram Jankhat Kannauj-209736
Office
...KAT PRASAD SHUKLA&Kund_Dateofbirth=10/...

हतप्रभ से हो गए अचानक,
कंठ हुआ अवरुद्ध राम का।
नाक न कट जाए समाज में,
इसका ही अब उन्हें भान था।

हम कितने सुख भोग रहे हैं,
हैं कितने गरीब, दुख कातर।
व्यर्थ अवधपति मैं, मुझको तो
था इससे अच्छा वन प्रांतर।

धनिक वृथा हैं इस समाज में,
वे तो अपने पर इठलाते हैं।
धन के मद में अंधे रहते,
उसके ही मिस बल खाते हैं।

अंतर्मन में कोलाहल था,
होने लगे घात-प्रतिघात।
आंधी दब जाती है जैसे,
होने लगती जब बरसात।

बौना होकर चांद पकड़ना,
सचमुच है हिम्मत की बात।
बरेठा गर डरता गिरने से
नहीं बिछाता व्यंग्य विसात।